Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=210
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE 2023, VOL- 11/77
https://doi.org/10.5281/zenodo.8099095

अध्यापक शिक्षा में वाणिज्य शिक्षण पर, स्व-विकसित,प्रमाप की प्रभावशीलता एवं उपलब्धि का अध्ययन

प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
पी-एच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) शिक्षाशास्त्र विभाग , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म॰प्र॰) *Email- Pradeepindore10@gmail.com*

Paper Received On: 21 JUNE 2023
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2023
Published On: 01 JULY 2023

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :- अध्यापक शिक्षा आधुनिक संकल्पना है जबकि शिक्षक प्रशिक्षण एक पूर्व कालीन परम्पराधारित प्रणाली के रूप में अधिक मान्य एवं सर्व परिचित है। पूर्ण कार्यप्रणाली यह प्रणाली प्रशिक्षण स्नातक की उपाधि से संबंधित रही जिसके अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों को ट्रेनी टीचर या प्यूपिल टीचर (प्रशिक्षु अध्यापक) के रूप में देखा जाता था एवं शिक्षण अभ्यास के लिए प्रयुक्त विद्यालय को प्रदर्शन एवं अभ्यासात्मक विद्यालय के रूप में जाना जाता था | आज 'प्रशिक्षण' के स्थान पर अधिक व्यापक पद 'शिक्षा' का उपयोग किया जाता है और परिणामस्वरूप इस आयोजन के आधार पर शिक्षा स्नातक (बी॰एड॰/ बी॰एड॰/ स्पेशल आदि) की उपाधि छात्राध्यापक छात्राध्यापिकाओं (प्रोस्पेक्टिव टीचर) को प्रदान की जाती है | प्रदर्शन विद्यालय आज सहयोगी विद्यालय कहलाते हैं और मात्र ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष के स्थान पर भावनात्मक पक्षीय विकास को भी महत्व दिया जाता है | कौशल,दक्षता आदि की संप्राप्ति के स्थान पर नैतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक मूल्यों को एवं व्यवसायगत का व्यवहार प्रारूप एवं अभिवृत्ति के प्रदर्शन के स्थान पर उच्च मानसिक क्रियाकलापों को भी विशेष महत्व दिया जाना प्रारंभ किया गया हैं | प्रशिक्षण

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की एकपक्षीय व्यवस्था का शिक्षा के बहुपक्षीय प्रारूप में परिवर्तन का ही परिणाम है कि अधिगम और अधिगमकर्त्ता के मानसिक पक्ष को महत्व देना प्रारंभ हुआ तथा अधिगम के नियम, कारक, व्यक्तित्व निर्माण, अभिप्रेरणा, प्रत्यक्षीकरण, सृजनात्मकता, आदि विविध मनोवैज्ञानिक पक्षों का समावेश अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ किया गया | शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे मात्र किसी कौशल या कार्य के निष्पादन तक ही सीमित नहीं किया जा सकता हैं | यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के नहीं व्यक्ति में निहित आंतरिक क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही वैयक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि या संदर्भ में उपयोगी तथा संसाधन संपन्न व्यक्तित्व के निर्माण के लिए उत्पन्न किया जाता है |

शिक्षा के माध्यम से ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर पाना संभव है जो वातावरण एवं मूल्यों के संरक्षण के साथ ही अनुकूल परिवेश के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है | व्यक्ति में मानवता बोध एवं सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष शिक्षा द्वारा ही संभव है, प्रशिक्षण या संप्रेषण व्यवहार के के माध्यम से नहीं |

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वाणिज्य शिक्षा :- स्वतंत्रता प्राप्ति के **पश्चात्** देश में शीघ्रता से औद्योगिक विकास होने के कारण वाणिज्य – शिक्षा की आवश्यकता विभिन्न स्तरों पर अनुभव की गई |इस युग में प्रारंभ में उच्च माध्यमिक स्तर पर अधिकांश विद्यालयों में वाणिज्य को एक ऐच्छिक विषय के रूप में रखा गया | लेकिन 1952-53में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यचर्चा के अनेकीकरण की अनुशंसाएँ की , जिसे केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार संस्थाओं ने मान लिया इस प्रकार 1952-53 में पुस्तपालन एवं लेखा को प्रमुख स्थान मिला जबकि वाणिज्य शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यचर्चा में शामिल किया गया | इसमें वाणिज्य अभ्यास , पुस्तपालन , वाणिज्य भूगोल अथवा अर्थशास्त्र एवं बैंकिंग एवं वाणिज्य के मूल तत्व एवं शीघ्रलेखन एवं टंकण शामिल थे | माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या की समीक्षा के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा समय – समय पर गठित की गई समितियों ने वाणिज्य को सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा में रखने की अनुशंसाएँ की थीं जिसके फलस्वरूप आज शिक्षा के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नवीन ढाँचे 10 + 2 + 3 में वाणिज्य को + 2 स्तर पर सामान्य शिक्षा कोर्से और व्यावसायिक शिक्षा कोर्से , दोनों में उचित स्थान दिया गया है | विश्वविद्यालय स्तर पर वाणिज्य शिक्षा का जन्म अर्थशास्त्र से हुआ है | विश्वविद्यालयों में वाणिज्य का अलग संकाय नहीं था | यह कला संकाय का एक अंग था | और इसे अर्थशास्त्र के पूरक रूप में ही माना गया था | अर्थशास्त्र विभाग के ही एक शिक्षक द्वारा वाणिज्य विभाग के संस्था प्रमुख के रूप में उसका प्रबंधन किया जाता था |

समस्या कथन :- अध्यापक शिक्षा में वाणिज्य शिक्षण पर स्व-विकसित ,प्रमाप की प्रभावशीलता एवं उपलब्धि का अध्ययन |

शोध उद्देश्य :–

1. वाणिज्य शिक्षण के चयनित प्रकरणों पर प्रमाप विकसित करना |
2. विकसित प्रमाप की सहायता से पढ़ाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण माध्य फलांकों की तुलना करना |
3. विकसित प्रमाप के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना |

परिकल्पना :– प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित की गई –

प्रमाप की सहायता से पढ़ाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त माध्य उपलब्धि फलांकों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा |

परिसीमन:–

1. यह अध्ययन केवल शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पर किया जाएगा |
2. प्रस्तुत प्रमाप केवल वाणिज्य शिक्षण में विकसित किया जाएगा |

न्यादर्श :- न्यादर्श के चयन हेतु सोद्देश्य न्यादर्श तकनीकी के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया | 22 विषयी न्यादर्श थे समस्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सूची प्राप्त की गयी | जिनकी आयु 22 – 25 वर्ष हैं , जिनका सामाजिक आर्थिक स्तर मध्यम हैं |

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध अभिकल्प :- प्रस्तुत शोध प्राकल्प का प्रारूप प्रायोगिक था | इसमे पूर्व परीक्षण , पश्च परीक्षण एकल समूह प्राकल्प का प्रयोग किया गया था | इस एकल समूह का पूर्व उपलब्धि परीक्षण लिया गया | पूर्व उपलब्धि उपलब्धि परीक्षण लेने के बाद सभी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को उपचार के रूप में प्रमाप स्वागति से पढ़ने के लिए दिया गया | फिर उसी एकल समूह का पश्च परीक्षण लिया गया |

पूर्व उपलब्धि परीक्षण	उपचार	पश्च उपलब्धि परीक्षण
O	x	O

O x O

यहाँ O = पूर्व उपलब्धि परीक्षण

x = उपचार

O = पश्च उपलब्धि परीक्षण

पश्च माध्य फलांको के लिए माध्य , मानक विचलन , एवं टी मूल्य

	माध्य	न्यादर्श	सहसंबंध	टी	स्वतंत्रता की कोटी	सार्थकता का मान
पूर्व परीक्षण	14.45	22	0.54	-2.62	20	0.016
पश्च परीक्षण	16.36	22				

सारणी से स्पष्ट हैं कि सहसंबंधित टी का मान -2.62 हैं | जिसकी स्वतंत्रता कोटी 21 पर सार्थकता मान 0.01 हैं जो 0.05 से छोटा हैं , अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है | इससे स्पष्ट है कि पूर्व परीक्षण , पश्च परीक्षण के माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर हैं, अतः शून्य परिकल्पना " शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाप की सहायता से

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पढ़ाने पर पूर्व उपलब्धि एवं पश्च उपलब्धि के माध्य फलांको में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं निरस्त "की जाती हैं आगे माध्यों के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि पश्च उपलब्धि के | माध्य फलांक16.36 हैं जो पूर्व उपलब्धि के माध्य फलांक 14.45 से उच्च हैं अतः | कहा जा सकता हैं उपचार उपलब्धि के पदों में प्रभावी पाया गया |

उपकरण :- प्रस्तुत शोध प्रदत्त संकलन हेतु वाणिज्य शिक्षण संबंधी उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया जिसका निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया | वाणिज्य शिक्षण पर आधारित (15) पन्द्रह वस्तुनिष्टप्रश्न थे | जिसके माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में प्रभावी अधिगम पाया गया |

प्रदत्तों का एकत्रीकरण :- सर्वप्रथम चयनित महाविद्यालय के प्राचार्य से शोधकार्य हेतु अनुमति ली एवं उन्हें शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया | शोध हेतु चयनित नयादर्श को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों भी शोध उद्देश्यों से अवगत कराया गया | तत्पश्चात् को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों वाणिज्य शिक्षण के प्रकरणों से संबंधित पूर्व परीक्षण दिया गया तत्पश्चात् प्रमाप द्वारा प्रशासित किया गया, इसके पश्चात् पश्च ,उपलब्धिपरीक्षण किया गया | तथा प्रमाप के प्रति की शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग उपयोग किया गया |

प्रदत्तों का विश्लेषण :- प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु सह-संबंधित पहले सह-संबंधित टी.परीक्षण लगाया गया एवं प्रतिक्रिया के अध्ययन लिए प्रतिशतता का प्रयोग किया गया |

निष्कर्ष :- प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष ज्ञात किए गए शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो हेतु उपचार प्रभावी पाया गया क्योंकि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पश्च परीक्षण के माध्य फलांक पूर्वपरीक्षण के माध्य फलांकों से सार्थक रूप से उच्च पाये गए | अथार्त उपचार का सकारात्मक प्रभाव शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पर देखा गया |

शैक्षिक निहितार्थ :- शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्तमान शोध कार्य का महत्वपूर्ण उपयोग हैं | प्रस्तुत शोध कार्य में प्रमाप का विकास किया गया था, जिसे मनोवैज्ञानिक , तार्किक एवं क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया था | इस शोध का

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपयोग का उपयोग कर पाठ्यपुस्तक लेखक , अध्यापक , विद्यार्थी और शोधार्थी इस शोध से मार्गदर्शन ले सकते हैं | इन उपबिन्दुओं का विस्तृत वर्णन अग्रलिखित प्रकार से हैं |

शिक्षक प्रशिक्षणार्थी :- प्रस्तुत शोध सामान्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों हेतु महत्वपूर्ण हैं | इस प्रक्रिया के द्वारा निदान एवं उपचार करवा कर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में वाणिज्य शिक्षण का ज्ञान करा सकते हैं | आज विज्ञान के इस युग में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों भी अपना विकास करना चाहते शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मन में आज ऐसा ज्ञान दिया है कि विज्ञान तथा तकनीकी के द्वारा ही व्यक्ति विकास संभव हैं किन्तु यदि देखा जाए तो वाणिज्य शिक्षण के क्षेत्र में भी काफी रोजगार एवं प्रगति की संभवना हैं जो देश में ही नहीं विदेशों में भी है |अतः शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को चाहिए कि वे भी हमारी सम्पूर्ण प्राचीन व महानतम भाषा का ज्ञान सम्पूर्ण रूप में तथा सुव्यवस्थित रूप से प्राप्त करें |

शोधार्थी :- शोधार्थी प्रस्तुत शोध का उपयोग कर समाज तथा अभिगमकर्ता कि आवश्यकता को ध्यान में रखकर विभिन्न विषयों के विभिन्न प्रकरणों पर प्रमाप का विकास हैं अपने शोध में मार्गदर्शन के लिए इस शोध का उपयोग कर सकते हैं |

भविष्य में शोध हेतु सुझाव :-भविष्य में शोध करने वाले शोधकर्ता के लिए अग्रलिखित सुझाव हैं |

1. शैक्षणिक संस्थानों के वाणिज्य शिक्षण के अन्य प्रकरणों पर भी प्रमाप का विकास किया जा सकता हैं |
2. प्रस्तुत अध्ययन में बड़ा न्यादर्श लेकर शोध कार्य किया जा सकता हैं |
3. प्रमाप का विकास विभिन्न विषयों जैसे – हिंदी , संस्कृत , अंग्रेजी , समाजशास्त्र , मनोविज्ञान आदि के विभिन्न प्रकरणों पर भी किया जा सकता हैं |
4. विभिन्न सामाजिक – आर्थिक स्थिति वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को लेकर प्रमाप की प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता हैं |
5. प्रमाप को विभिन्न भाषाओं में विकसित किया जा सकता हैं |

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुलश्रेष्ठ.एस.पी,*(1982):* शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार विनोद पुस्तक मंदिर , , | आगरा

शर्मा. ए .आर,*(1993):* अभिक्रिमित अनुदेशन | मेरठ बुक डिपो ,

जोशी. के .एवं जोशी . ए ,(2003): शैक्षिक तकनीकी| आगरा भवन , आगरा ,

भट्टाचार्य.जी.सी,(2011): अध्यापक शिक्षा ,अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा |

अग्रवाल एवं जायसवाल.सी.जे,(2012): संजय प्लेस, अग्रवाल पब्लिकेशन, शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध : आगरा |

पाल, हंसराज एवं शर्मा मंजुलता ,*(2014):* मेन अंशारी रोड दरियागंज , शिक्षा पब्लिकेशन, वाणिज्य शिक्षण: दिल्ली |

Cite Your Article as:

Pradeep Kumar Viwakarma. (2023). ADHYAPAK SHIKSHA MAIN VANIJYA SHIKSHAN PAR, SWA-VIKSIT PRMAP KI PRABHAVSHILTA EVUM UPLABDHI KA ADHYYAN. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 11(77), 13–19. https://doi.org/10.5281/zenodo.8099095

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies